

आषाढ मकरदासि

228

I

भाविष्य स्वयं
संस्कृत

अ, व, द, य सं ५०५

145 अ, अ
द, व.
Divination

आम बरदाधि	
228	I

॥ श्री ॥

॥ ४ ॥ श्री गुरुदेव नमः ॥ श्री गुरुदेव नमः ॥ श्री गुरुदेव नमः ॥

॥ श्री गुरुदेव नमः ॥ श्री गुरुदेव नमः ॥ श्री गुरुदेव नमः ॥

॥ श्री गुरुदेव नमः ॥ श्री गुरुदेव नमः ॥ श्री गुरुदेव नमः ॥

॥ श्री गुरुदेव नमः ॥

॥ श्री गुरुदेव नमः ॥

॥ श्री गुरुदेव नमः ॥

॥ श्री गुरुदेव नमः ॥ श्री गुरुदेव नमः ॥ श्री गुरुदेव नमः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ श्रीगुरुव ॥ अथ वदय ॥ ॐ विष विना हि त्रु विना हि त्रु
वर्त्त विगिष अहं न दिङ्गोङ्गो स्था हा ॥ धाल सु ३ ॥ अस्यैव क्वालि
नी वायु यव रुत यन अग्नी कल नित्ये न वै ॥ थ न पल पाव संधा
ल काय ॥ अत्र अत्र ॥ थ न थान सु. ला ए क्क क्क न वि न ल पा का य
सिद्ध यू व क्क न द व व ल द व क्क न ग गुरु व ल व न अय म रु निः
सु न मन सु ल ल यं क ना क्क मि रु सं ग म न व सु सं ग मालः ॥

कुरु य ल प रु व् व यु ग रा ह द व् व सु र्षं व् व सु समा ग मः कल्या न
पा फः दु ख मा व् व मन सं ना प द व् व थ मं ग ल यु ग व धाय ॥ १ ॥
॥ अथ वद ॥ महा कृत धायः (थ ग्या य म न व अ न ग गुरु न व क्षित
या द न नाः द ध रु या व या न सा ध न ध न्य समा ग म रु यिव अ ग
व मु मा लः थ या अ हि ग्या न जा न स अा दिन द्या ल द व क्क ल द
व पू जा माल ॥ २ ॥ अथ वद ॥ थ यु ग न ग कि धाय या य महा क थिन

हिंसखदाद गमलवन्धविनादतामनसुहृदसंगमालदगम
मान्यकल्यानयाव्वथयाचिकुवकसुनिलदव॥३॥**अवद॥**
हापुक्कुकुनगरुनाकिमरुताखदाव्वुपनिग्यादातादनाः
सुखवलादादव्वथवथायनालनावःयत्तयातसाताव्वनव
वंलाहथनिसुपदवदवलकुदवकवमिगुनापलादाः
आदिनगुर्यआदिनगुरूपुजामाल॥४॥**अदव॥**हापुक्कुक

हिंसदागमनवाधयागकुनलाहदवथमकुनकुवयीगीया
यादवाककुनमसेवयीमिमवकुनवनवनवसुल्ल
लाहदवसुमिगुवकार्ययावसिद्धव॥५॥
अवय॥थंयुगनदथजिथवथथलोहादवअ
ननकाशुनासुइलीगनसपुजायातसाकामवदु
कल्यानमववुआदिनवननाहसुखनदधुव

॥ **अथ** ॥ १॥ युनमनसं यं यज्ञस्य यो दृष्टुं भगवता
यं महिषं दत्तां आदित्यं पूजायां साः पूः पूरा वस्तु
आदिनं संप्रति मित्रं भद्रं पुत्रं सन्तानं रादयि व
ध्यायि विद्मः भलं किं सिंसां आदिनं कुरु ॥ १॥ **अथ**
॥ ॥ धृष्टं धृष्टं अथ नाभं सांति लं सुमयास्यं ये
न यावत् अथ रादयि वस्तु लं सांति ॥ १॥ **अथ** ॥ १॥

नमनसं आनन्दमश्नुते लमयं लं युनयि कं वदः रा
ने संपूजायां साः धनं धनं लं युतिः पूरा रादयि व
यं महिषं कुरु यं कननं सुदां कुरु गुरुं सांति
नं यतिः कुरु लं यिदा कुरु सूर्यं रा मयं धनं स
कुरु कुरु ध्यायि विद्मः ॥ १॥ **अथ** ॥ युनयि तं धितं
मदं नां नमति मतिं कुरु मं सा कुरु कुरु भद्रं

तु डावतस व नि, ब्याव वृडा धुदय क मनस दव,
काय वु। यं रुडा, लता ह, व धुद-ग न द धा थ या यिऊ
द ल या जा हा त स, द्या त दव ॥ १० ॥ **अजय** ॥ दून म.
हाक वृश व, लिथे रि ठ क म या डा व, आ न द शूँ
व **म** म न क व धुना प गा वृ व, थि न डा का स द्या
सुद यि व ॥ ११ ॥ **अयय** ॥ दून मनस ठि क ल्य दव.

सि व-वृ व, म सि व-वृ गा थ क, स प ति रू क लि
म ला नि, यं न वा ल दून वा द्या, सि धि इ वृ व, कू र
व कू द्वि, ^{तया} अन ग व रू, ठि द्वि इ वृ व, ग न स पू डा या
यं मा ल, क गा का त न स, इ र वृ स, क ल रू द वृ व थ
या दि न दून ॥ १२ ॥ **अवव** ॥ दून के मि सा त न, यी
नी कू ल इ व, य थि त न, जति म न डा, न दून ग तु भा वृ

व कार्यसिद्धिरूँ व अ न गय काल ६ क न म ना सिद्ध व क व ध
संयानि रूँ व ग ६ स पू जामाल क्राया व न रु लायि व ॥ १३ ॥
॥ अ य अ ॥ ध कार्य म सि धू मा द न क न आव रिं पू ल ख वा सि
न न सि धयि व ध न ध न्य कार्य कला न क आदि न ला रु यु वा
स ग म न स स्य प्र स य व न मा स हा म ल ला स न स क ग क न ध न
आदि न ष ॥ १४ ॥ अ न ॥ थ य या क न अ स वाल न सु ल म य

कं य ध या य म रू थं ध कार्य क व न पु नि सि ध रू व रिं कार्यः
क ल्या न क न्या ला रु रू व ग या न लं रू या ध कं क ॥ १५ ॥ अ व
अ ॥ ध कार्य या य क न म रू ता काल अ य मा न रु ल रिं मि गु ला
न सा सिद्ध रू व द व या व ल न य या कार्य या य सं य रिं ला रू व
रिं मि ग्ना ना य ला क कि सि क ॥ १६ ॥ व व व ॥ क न म न स रु लः
पा थ सि ध रू व द व या व ल न ग क न रु ल य व रू व म ल ड

[illegible]

खद्वैत ग. ६। सयूजा माल ॥ ३ ॥ वदव ॥ सागीया सल, चिकादवः
 अविष्ठा सियाक, विष्ठा सयाक, थन नमहिं, गुरु नासकूया नलि
 कार्य सिधयिब, गाकाल, एवास चिका, गुद्व, थन स, निलदव ॥
 ॥ ४ ॥ वयव ॥ कून चित, वंवलरुव, उद्वगदव, द्दुव मिशुव गुरु
 रुव, थव विष्ठा समनव, अथ चिका, वंधू उलाक, गुद्व, थन स, नि
 लदव ॥ ५ ॥ वदव ॥ अन्न गकार्य, सफुन, कूव, पिनिषा यध

व श्रीपीतिमनवसयातसा सिद्धि यसं नायत्रयास कलह ३००३
दशायुजामाल लि (थ) गु खदव ॥ ६ ॥ वदद ॥ त्रिनिश्रयास वावः
मसिधूनाकालन सिध ००३ चनन ००५ कास मसिधू अर्थ हानिः
त्रयास रुदयद् ४ खदव त्रिथकार्य सिद्धि यिव ॥ ७ ॥ वद ॥
भवडा यत्रद गव न्य चिन्तादव वनमनव हिं पूत्रुष सं गताथ
नाहद ००३ कलानया चिन्ता महादव पूजायातसा धनवृधि सुख

द ००३ मनस लालया विवमु सिद्धि ॥ ८ ॥ वयय ॥ चूनकार्य महाक
थिन जलयाठावच्छाय मसिधू भवगुयाव भव चिन्ताकार्य लाल
यि गुदया अक नस तिलदव ॥ ९ ॥ व ॥ चूनचित्तम लवद (थ)
रुलद ००३ आनन्दयाडा कुरुम्ब कल दशायुजामाल दवपाला
हानस द्यालदव ॥ १० ॥ वय ॥ थकार्य सिध ००३ व ४ ख सियऊक
माल मिठुदयकमाल क काय वमुल धनधन्य कलान आदिन

दयकमनसदवत्रवसं सिधब्द॥११॥ वत्रव॥ थकार्यमसिधुः
गकुदवयन्नयातसानासगमनयातसा (थनं त्राह दवभाकवः
मुलिहावब्दकपालसद्यालदवष्वनकठर्यीतलसुगिलदः
व॥१२॥ ववत्र॥ थकार्यमहाकथिठकलूनसिधयिबद्रुखनय
मालसूानसम्यतिवीक्षायाकतद्रुसुतिलदव॥१३॥ वत्र॥
थकार्यमहाक ~~क~~ मफुपनिसुनवित्राधचिन्तायाकधनवीक्षा

नाकालसिधब्दधनकृवसुखलिथंयाफद्रब्द॥१४॥ वदया
मनथनकार्यसिधब्ददधयायमालहिं४महिंछनसवक्रा
नधनवृद्धिसुखदयिबद्रुदवगायूजामाल॥१५॥ ववय॥ थ
कार्यसिधयकहनास्वायममालभवतानसहितनसिधुभव
यावकुलारनयापकर्मयायलालयूछनचितससंदहद्रवग्य
यममाल॥१६॥ ददद॥ त्रमकाक्षसिधुल्याखडलगायासुनीसकतिकक

क. ग्धायमनत्रयर्नयावसिधं० उ० मल उ० दसा लारु० दसं लारु०
न क्रलम उ० मालस्या द० उ० ॥ १॥ दयत्र॥ थकार्यं स० न ग० क० क०
न० द्याता विद० द० नमन उ० थन विचालयाव स० द्याक० ह० क्रिया
व० धनला ह० दयिद्व० उ० हरुल० उ० व० ॥ ८॥ दत्रय॥ थकार्यं द्ययन
क० म० सिधल० दान० पू० र्ण० न० उ० ल० न० सिधं० व० व० ध० ना० य० ला० यि० उ० ध०
न० धी० न्य० ल० ला० ह० दयि० उ० ग० उ० य० ल० य० रु० यि० व० ॥ ९॥ ददव॥ थ

कार्यमहाकथिदुज्जयायमालाभवयानिमृतिनन्दु४खसियम
नडाग(६)सपूजायानसाधनधर्मन्यायफरुयिडा॥१०॥दवद॥थ
कार्यसिधल(थनडाडाअनगवमुसिधलाग्रहमहिडासवि
नमुरुववुअयासवावआवनलिक्कनसुखरुल॥११॥दवव॥थ
कार्यत्रर्थलाहदवसाडाउत्तनकलागउदवविनाधयाकः
निलथकरुलाग(६)सपूजामाललखकड॥१२॥दत्रव॥थका

यमनथानरुलदडाऊनसनायाकृष्णातायामहादेवपूजाया
वविदग्गगर्थमाहदयिडावीकाऊळडा॥१३॥**दवत्र**॥थका
र्यत्राकयाखठडाउमसिधसुवाठठनमनलमिगुडलाना
त्रनगवकुडूकत्राववीधवयाफरुत्राधनधन्यसंपनिलायि
वदखनायमनव॥१४॥**दवय**॥थकार्यत्राहदडाभाकदडाभा
कधकंम्ययमनवविवाल्याडाऊलयावनात्रायनपूजा

यायमाससिमाकूठगृहलाहऊळव॥१५॥**दवत्र**॥थकार्यनव
मनूष्यानरुलावियाडानलाथललसानवाभमनडामिगुहिन
ववनहायावथकार्यपठगधमसिलविवादमनवभवया
वसूडयमनडासाहादेवपूजामालयिनिकामनानत्रायिडा॥
॥१६॥**ययय**॥सुखनथकार्यसिधूळूदवनापूजायानसास
यनित्रायिडागऊनासूयिडाधनपूगलागमुखत्रायिडाऊव

आर्य समाज काथि	
228	I
ASIAN ARCHIVES	

यादवी

२

आर्य समाज	
228	I
ARCHIVES	

पालाहानिसुतिलदडाथया॥१॥ यदद॥ कनचिन्मसमष्टुलिना
गलपावभक्त्यनिमनद्रुखविडाविस्वासमनडालिथसिध
यिवरुसुपाफरुर्वनाभरुलाधनधर्मनरुतसद्यालवध
दडादवपूजामाल॥२॥ यत्र॥ कनधवदखदवलयनाड
लयदडापूजामालमलवाठसास्मानवृद्धिदयसत्रनगवि
कादवदखसानिरुवत्रावनलिकल्यानरुला॥३॥ ययद॥

धकार्यशुखनसिधळडापुन्ययाठानलागमद्रुधकद्रुखवाय
मनदगुलीयागडवळडासायनकयाववाठसूकरुना
गलीसपूजामालयाठाथाहालजिळ्व॥४॥ यवद॥ धकार्यन
गामनरुयासमसिधुकरुतावकयावसिधयिवसाकउठगरुना
ककायानासरुयाडाहर्षमद्रुहिनायनागदवलपर्वनसयन
सखठनिम्बय॥५॥ यदय॥ धकार्यसिधयडकरुनपुन्यया

रुलन सिद्ध यित्त्वं कयनन सिधल भव दालन ग्वडा सिधः
यिद स्वदत्रंग सनिलदव ॥ १ ॥ यदत्र ॥ थकार्य सिद्ध यिला मः
सिधयिला धक विकल्प रुडा कुन ल ग्वदव सिध ग्वडा त्रर्थ गारः
श्राग ग्व पल्लि ग थव थि थि नाय लाक त्ररु गु न रुव ॥ १ ॥ यत्र द
थकार्य सुंदर नाद न संय निला यिव तुमि सत्रर्थ ला र कुन म
न स खाद थं सिद्ध यिडा य नाय सय न स खद ॥ ८ ॥ यवव ॥ ॥

त्रभा कार्य भवन याय म न क ध क वा ना कुन चिह्न नय माल म
सिध यरुडा कार्य न डा ध द थडा न नाय ला दाव पीति संव न्
द ग्व ॥ ८ ॥ यवय ॥ त्रभा कार्य हिं मषू यल ला कमद् लि थय
य माल यिडा थका थवन मि विना भाक व मु संग म दव त्रा गि स
गी कुन क द ॥ १० ॥ ययत्र ॥ श्रर्थ विना या क लाय माल काय वि
ना या क लि थ सिद्ध यिडा मिखा साक रु का द यिडा थकार्य क

नरुसुनातडायिडा ॥ ११ ॥ यत्र ॥ धकार्यमहाकथीठ भवनपठ
नलाउलयायममाल अर्थ सिद्धि सुर्वभगमन दुगमिस्थाल
दडा ॥ यत्र यजामाल सिद्धयिद ॥ १२ ॥ यदव ॥ धकार्यवकन
मदयावमुनसिद्धयं यलनसिद्धिडा ॥ यत्र यजामाल सिद्धयिद
यनरुयाडाठ ॥ यत्र यजामाल सिद्धयिद ॥ १३ ॥ यत्र ॥ धकार्यमहाकथीठ कुगसाधवालवालयात

सांमसिद्धिनित्रर्थसजनचिन्नाधनयाफिकात्रनदडा लिथं स
कुनासुडूडा सिद्धयिडा मिउतुद्ध ॥ १४ ॥ यवत्र ॥ धकार्यस
वृद्धिरुव ॥ यत्र यजामाल सिद्धयिद ॥ १५ ॥ ययव ॥ यत्र यजामाल सिद्धयिद
दडाधर्मयावलन सिद्धयिद ॥ १६ ॥ ययव ॥ यत्र यजामाल सिद्धयिद
रुमदाउनकुसंगरुयिद ॥ १७ ॥ ॥ ॥

ॐ निमिदवयागुविलचिर्निकासहिर्नकवलिसारुसमाफ॥
॥ गुरु ॥ यदि गुरुं मसुद्धं वा। ल्यपिकादाषनदियन॥ संवत् २००१
वेभाषक १० हं गीलया आचार्य आनन्दसिनं पिच्छयामिलक
या न वासुविया गुरुं गुरुं कुरुमा॥ गुरु ॥ सर्वदा न मु॥ ॥ ॥











